Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 5, August-2021, ISSN 2230-7540

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की अवधारणा

Rakhi Kumari[1]* Dr. Vijay Gupta[2]

[1] PhD Student, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Guide, Kalinga University, Raipur

सार – ***शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य की पशुवत प्रवृत्तियों का नाशकर उसे मानव बनाती है। परन्तु शिक्षा के निरन्तर गिरते हुए स्तर से सभी बुद्धिजीवी, शिक्षाविद् एवम् समाजशास्त्री चिंतित हैं। शिक्षा की गुणवत्ता के विकास को यदि राष्ट्र निर्माण की नींव कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं, क्योंकि शिक्षक की राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक के द्वारा ही शिक्षा के माध्यम से बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करके, उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाकर तथा उन्हें समाज, राष्ट्र और विश्व के नागरिकों के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिये तैयार किया जाता है, परन्तु शिक्षा के सभी उद्देश्य और प्रयोजन महाविद्यालयों की कर्मभूमि में तभी फलीभूत हो सकते हैं जबकि योग्य, कर्मठ व निष्ठावान शिक्षक हों। सरकारी क्षेत्र से निजी क्षेत्र में बदलाव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसलिए, शिक्षा के क्षेत्र में भी, निजी क्षेत्र अपने अभिभावकों (गुणवत्ता) के कारण फलते-फूलते दिखते हैं, जैसा कि अधिकांश अभिभावकों द्वारा माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण है। जैसे कि यह भारत में एक प्रमुख चिंता का क्षेत्र है। हालांकि वर्तमान में शिक्षा, शिक्षा में एक प्राथमिकता क्षेत्र है, यह क्षेत्र शैक्षिक अनुसंधान में उपेक्षित रह गया है। विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस), वर्ग आकार और उपलब्धियों जैसे अन्य चर के संबंध में महाविद्यालयों इनपुट का क्षेत्र भारत में बड़े पैमाने पर शोध नहीं किया गया है।***

कीवर्ड - निजी शिक्षक, शैक्षिक वातावरण

----------X----------

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश पुंज है जो संपूर्ण समाज को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय होता है। किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, समाज तथा राष्ट्र की पहचान शिक्षा की प्रकृति एवं गुणवत्ता से होती है। सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा, अंधविश्वास, कुरीतियों तथा पिछड़ेपन को दूर कर स्वच्छ एवं नियोजित समाज का निर्माण करती है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अपने आसपास की घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर उनका विश्लेषण उनमें निहित तर्क की खोज और अंततः किसी परिणाम का अनुमान लगाने की क्षमता का विकास करना होता है। शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य को समाज व आसपास के पर्यावरण का ज्ञान, संस्कृति तथा विभिन्न परिस्थितियों में भूमिका का निर्वहन रोजगार योग्य बनाने तथा उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये प्रेरित करती है। शिक्षा बालक को एक संस्कारवान एवं चेतनशील प्राणी बनाती है यही बालक देश का भविष्य होते हैं और शिक्षा किसी भी देश की बुनियाद होती है।

अतः आवश्यक है कि बुनियाद मजबूत होनी चाहिये। सुदृढ़ शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। शिक्षा संस्कार देती है संस्कार से विचारों का परिष्कार होता है। परिष्कृत विचारों की नींव पर आदर्श चरित्र का निर्माण होता है। चरित्रवान व्यक्तियों से स्वस्थ समाज बनता है और स्वस्थ समाज ही किसी राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। उससे राष्ट्र को एक पहचान मिलती है।

शिक्षा का जीवन में वही स्थान है जो फूल में उसकी सुगन्ध का होता है। शिक्षा समाज में चलने वाली वह सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवम् कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक को सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। इस तरह शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है।

शिक्षा वैयक्तिक सामाजिक एवम् राष्ट्रीय विकास का आधार है जिस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र की आवश्यकताओं, जन आकांक्षाओं एवम् मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है तथा

www.ignited.in

जिसका क्रियान्वयन प्रभावी व कुशल प्रशासकों एवम् शिक्षकों के हाथ में रहा है वह राष्ट्र उत्तरोत्तर बहुमुखी उन्नति करता रहा है।

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य की पशुवत प्रवृत्तियों का नाशकर उसे मानव बनाती है। परन्तु शिक्षा के निरन्तर गिरते हुए स्तर से सभी बुद्धिजीवी, शिक्षाविद् एवम् समाजशास्त्री चिंतित हैं। शिक्षा की गुणवत्ता के विकास को यदि राष्ट्र निर्माण की नींव कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं, क्योंकि शिक्षक की राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक के द्वारा ही शिक्षा के माध्यम से बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करके, उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाकर तथा उन्हें समाज, राष्ट्र और विश्व के नागरिकों के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिये तैयार किया जाता है, परन्तु शिक्षा के सभी उद्देश्य और प्रयोजन महाविद्यालयों की कर्मभूमि में तभी फलीभूत हो सकते हैं जबकि योग्य, कर्मठ व निष्ठावान शिक्षक हों।

सरकारी क्षेत्र से निजी क्षेत्र में बदलाव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसलिए, शिक्षा के क्षेत्र में भी, निजी क्षेत्र अपने अभिभावकों (गुणवत्ता) के कारण फलते-फूलते दिखते हैं, जैसा कि अधिकांश अभिभावकों द्वारा माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण है। जैसे कि यह भारत में एक प्रमुख चिंता का क्षेत्र है। हालांकि वर्तमान में शिक्षा, शिक्षा में एक प्राथमिकता क्षेत्र है, यह क्षेत्र शैक्षिक अनुसंधान में उपेक्षित रह गया है। विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस), वर्ग आकार और उपलब्धियों जैसे अन्य चर के संबंध में महाविद्यालयों इनपुट का क्षेत्र भारत में बड़े पैमाने पर शोध नहीं किया गया है। विकसित देशों में अच्छी संख्या में अनुभवजन्य अध्ययन में आयोजित किए गए हैं मंच।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की अवधारणा

चूंकि प्रशिक्षण अन्य सभी व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण है, अनुसंधान से पता चलता है कि शिक्षकों का प्रशिक्षण भी आज की गतिशील दुनिया में समान महत्व का विषय है। रवींद्रनाथ टैगोर ने ठीक ही कहा है कि एक शिक्षक तब तक सही मायने में कभी नहीं पढ़ा सकता जब तक कि वह स्वयं सीख रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक नहीं जला सकता जब तक कि वह अपनी लौ को जलाता न रहे। उपरोक्त शब्द स्पष्ट रूप से शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण पर महत्व रखते हैं।

सीखने की प्रवृत्ति वाला एक योग्य शिक्षक समय की मांग है। शिक्षा प्रणाली की धुरी, शिक्षकों को जब तक विकसित और निरंतर आधार पर विकसित नहीं किया जाता है, तब तक देश की शिक्षा की गुणवत्ता वैश्विक मानकों को प्राप्त नहीं कर सकती है।

शिक्षा आयोग (1964-66) ने कहा है कि, ष्शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कारकों में, शिक्षकों की गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं।ष् शिक्षण तकनीक ने सक्षम और सीखने वाले शिक्षकों को तैयार करने के लिए दो प्रमुख प्रकार के शिक्षा कार्यक्रम विकसित किए हैं- सेवा पूर्व प्रशिक्षण और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण।

सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षकों को बनाने और उन्हें शिक्षण पेशे की बुनियादी स्थितियों, कौशल और दृष्टिकोण से परिचित कराने की एक प्रक्रिया है। यह प्रारंभिक चरण है, इसके अलावा शिक्षण के पेशे में प्रवेश करने की आवश्यकता है। सेवा पूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शिक्षकों को विभिन्न शिक्षणध्अधिगम सिद्धांतों, विषय वस्तु, पाठ्यक्रम डिजाइन के नियमों, बाल विकास और ज्ञान की प्रासंगिकता को समझने में सहायता करता है (कूपर, 2003)। हालाँकि, आज की तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया में ज्ञान भी पुराना और अप्रचलित होता जा रहा है। इसलिए यह बिल्कुल भी संभव नहीं है कि एक सेवा-पूर्व प्रशिक्षण प्रदर्शन शिक्षकों को ऐसे कौशल और गुणों से लैस करेगा जो उनके पूरे पेशेवर करियर में उनकी मदद करेंगे। इसलिए आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया की आवश्यकताओं से मेल खाने के लिए अद्यतन करने की आवश्यकता एक आवश्यकता बन गई है। सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण इसलिए शिक्षकों के सशक्तिकरण और विकास का उपाय है।

जैसा कि पहले के खंडों में चर्चा की गई है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए कुछ विशिष्ट कौशल (जो एक कक्षा के प्रमुख मुद्दों को कवर करते हैं) की आवश्यकता होती है और इस प्रकार सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रमुख भूमिका उन कौशलों के विकास पर काम करना है।

शोधकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम महत्वपूर्ण है न केवल नए प्रवेशकों को उस कार्य के बारे में जागरूक करने के लिए जो वे प्रदर्शन करने वाले हैं, बल्कि प्रशिक्षुओं को शिक्षकों के रूप में उनके लक्ष्यों को समझने का प्रयास करने के लिए, उन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल, कक्षा में आवश्यक शिक्षण व्यवहार, समस्याएं और दिन-प्रतिदिन की कक्षा की गतिविधियों आदि का समाधान।

डिक्सन एट अल। (२०१४) ने पाया है कि जिन शिक्षकों ने व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी शिक्षण शैली के विस्तार और अभ्यास में अधिक समय बिताया है, वे अपनी कक्षाओं में अधिक आत्मविश्वासी और प्रभावी पाए गए हैं। सामान्य तौर पर, लगभग सभी प्राथमिक शिक्षकों को एक

www.ignited.in

से अधिक विषयों को पढ़ाने के लिए कहा जाता है, इस प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण उनकी संयुक्त जरूरतों को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका सीखने में मदद करने के लिए काफी आवश्यक हो जाता है। हार्मर (2002) ने कुछ ऐसे तरीके सूचीबद्ध किए हैं जिनसे शिक्षक सीख सकते हैं और खुद को पेशेवर रूप से विकसित कर सकते हैं।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की अवधारणा

चूंकि प्रशिक्षण अन्य सभी व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण है, अनुसंधान से पता चलता है कि शिक्षकों का प्रशिक्षण भी आज की गतिशील दुनिया में समान महत्व का विषय है। रवींद्रनाथ टैगोर ने ठीक ही कहा है कि एक शिक्षक तब तक सही मायने में कभी नहीं पढ़ा सकता जब तक कि वह स्वयं सीख रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक नहीं जला सकता जब तक कि वह अपनी लौ को जलाता न रहे। उपरोक्त शब्द स्पष्ट रूप से शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण पर महत्व रखते हैं।

सीखने की प्रवृत्ति वाला एक योग्य शिक्षक समय की मांग है। शिक्षा प्रणाली की धुरी, शिक्षकों को जब तक विकसित और निरंतर आधार पर विकसित नहीं किया जाता है, तब तक देश की शिक्षा की गुणवत्ता वैश्विक मानकों को प्राप्त नहीं कर सकती है।

शिक्षा आयोग (1964-66) ने कहा है कि, ष्शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कारकों में, शिक्षकों की गुणवत्ता, क्षमता और चरित्र निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं।ष् शिक्षण तकनीक ने सक्षम और सीखने वाले शिक्षकों को तैयार करने के लिए दो प्रमुख प्रकार के शिक्षा कार्यक्रम विकसित किए हैं- सेवा पूर्व प्रशिक्षण और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण।

सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षकों को बनाने और उन्हें शिक्षण पेशे की बुनियादी स्थितियों, कौशल और दृष्टिकोण से परिचित कराने की एक प्रक्रिया है। यह प्रारंभिक चरण है, इसके अलावा शिक्षण के पेशे में प्रवेश करने की आवश्यकता है। सेवा पूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शिक्षकों को विभिन्न शिक्षणध्अधिगम सिद्धांतों, विषय वस्तु, पाठ्यक्रम डिजाइन के नियमों, बाल विकास और ज्ञान की प्रासंगिकता को समझने में सहायता करता है (कूपर, 2003)। हालाँकि, आज की तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया में ज्ञान भी पुराना और अप्रचलित होता जा रहा है। इसलिए यह बिल्कुल भी संभव नहीं है कि एक सेवा-पूर्व प्रशिक्षण प्रदर्शन शिक्षकों को ऐसे कौशल और गुणों से लैस करेगा जो उनके पूरे पेशेवर करियर में उनकी मदद करेंगे। इसलिए आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया की आवश्यकताओं से मेल खाने के लिए अद्यतन करने की आवश्यकता एक आवश्यकता बन गई है। सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण इसलिए शिक्षकों के सशक्तिकरण और विकास का उपाय है।

जैसा कि पहले के खंडों में चर्चा की गई है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए कुछ विशिष्ट कौशल (जो एक कक्षा के प्रमुख मुद्दों को कवर करते हैं) की आवश्यकता होती है और इस प्रकार सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रमुख भूमिका उन कौशलों के विकास पर काम करना है।

शोधकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम महत्वपूर्ण है न केवल नए प्रवेशकों को उस कार्य के बारे में जागरूक करने के लिए जो वे प्रदर्शन करने वाले हैं, बल्कि प्रशिक्षुओं को शिक्षकों के रूप में उनके लक्ष्यों को समझने का प्रयास करने के लिए, उन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल, कक्षा में आवश्यक शिक्षण व्यवहार, समस्याएं और दिन-प्रतिदिन की कक्षा की गतिविधियों आदि का समाधान।

डिक्सन एट अल। (२०१४) ने पाया है कि जिन शिक्षकों ने व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी शिक्षण शैली के विस्तार और अभ्यास में अधिक समय बिताया है, वे अपनी कक्षाओं में अधिक आत्मविश्वासी और प्रभावी पाए गए हैं। सामान्य तौर पर, लगभग सभी प्राथमिक शिक्षकों को एक से अधिक विषयों को पढ़ाने के लिए कहा जाता है, इस प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण उनकी संयुक्त जरूरतों को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका सीखने में मदद करने के लिए काफी आवश्यक हो जाता है। हार्मर (2002) ने कुछ ऐसे तरीके सूचीबद्ध किए हैं जिनसे शिक्षक सीख सकते हैं और खुद को पेशेवर रूप से विकसित कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी और निजी विद्यालयों में नामांकित छात्रों के शैक्षणिक प्रापक टी का अध्ययन करना ।

2. लिंग के आधार पर सरकारी और निजी महाविद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा

भदौरिया (2013) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य था, शासकीय एवं अशासकीय उच्च

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। इसके लिये ग्वालियर शहर में कार्यरत 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन किया गया। सांख्यिकीय गणना के लिये मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध एवं टी-परीक्षण का प्रयोग कर प्रदत्तों का विवेचन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अग्रवाल (2012) ने विभिन्न प्रबन्धतंत्रों द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता, कृत्य सन्तोष तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन पर एक शोध अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, इलाहाबाद द्वारा संचालित सरकारो, अनुदानित एवं गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता, कृत्य सन्तोष तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु प्रदत्त के रूप में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों के 38 विद्यालयों के 436 शिक्षकों द्वारा 3299 विद्यार्थियों का चयन किया गया। सांख्यिकीय प्रविधियों में मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण व क्रान्तिक अनुपात का उपयोग किया गया। परिणामस्वरूप पाया गया कि सरकारी विद्यालयों का उक्त चरों के सन्दर्भ में स्तर अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों की अपेक्षा उच्च होता है। जबकि अनुदानित विद्यालयों का मध्यम तथा गैर अनुदानित विद्यालयों का अपेक्षाकृत निम्न स्तर होता है।

मधु (2014) ने एक शोध अध्ययन ष्प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन पर किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन, यौन भेद के आधार पर ज्ञात करना था। इसमें अध्ययन के लिये प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 200 अध्यापकों का चयन किया गया। अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, सह सम्बन्ध एवं टी-मान, सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग कर पदत्तों का विवेचन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया गया कि प्रशिक्षण शिक्षण प्रभावशीलता को सार्थक रूप से प्रभावित करता है तथा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता यौन भिन्नता से अप्रभावित रहती है।

रूबीना (2014) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता व मूल्यों का अध्ययन पर शोध किया। जिसका मुख्य उद्देश्य अधिक प्रभावशीलता व कम प्रभावशीलता शिक्षकों के सैद्धान्तिक, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक मूल्यों की तुलना करना था। इसमें अध्ययन के लिये लखनऊ के माध्यमिक विद्यालयों के 102 शिक्षकों का चयन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोंपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया गया कि अध्ययन में सभी मूल्यों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। केवल सामाजिक मूल्य ही प्रभावशाली पाये गये।

आजाद (2012) के द्वारा एक शोध अध्ययन विद्यालयी शिक्षकों के व्यक्तित्व व शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन पर किया जिसका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक आधार पर अधिक व कम प्रभावशाली अध्यापकों के श्रेणीबद्ध करना, लिंग स्कूल का स्थान और स्कूल के माध्यम के आधार पर शिक्षकों की तुलना करना था। इसमें अध्ययन के लिये न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया, 30 ग्रामीण व 30 शहरी विद्यालयों के 166 अध्यापकों का चयन किया गया। अध्ययन में कैटेल द्वारा निर्मित 16 पी.एफ. प्रश्नावली तथा शर्मा व कुमार द्वारा निर्मित पी.ए.मापनी का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग कर प्रदत्तों का विवेचन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया गया कि प्रशासनिक प्रभावशीलता के सन्दर्भ में कम व अधिक प्रभावशील शिक्षकों में उच्च सार्थक सम्बन्ध पाया गया। अध्यापक व अध्यापिकाओं की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं होता है।

नायक (2016) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्यापकों के व्यक्तित्व, अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य था भौतिक विज्ञान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्यापकों के आन्तरिक व बाह्य व्यक्तित्व के प्रभावों का अध्ययन करना तथा अध्यापकों के आन्तरिक व बाह्य व्यक्तित्व पर उनकी अभिवृत्तियों और शिक्षण प्रभावशीलता का स्वतंत्र तथा संयुक्त रूप से प्रभावों के मध्य अन्तर का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में 101 माध्यमिक विद्यालयों में भौतिक विज्ञान के 208 पुरुष अध्यापकों को लिया गया। एक्स पोस्ट फैक्टो विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययनोपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया कि अध्यापकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कोई सार्थक अन्तर नहीं था तथा बाह्य व्यक्तित्व वाले अध्यापकों की तुलना में आन्तरिक व्यक्तित्व वाले अध्यापकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पाया गया।

संजय (2013) के द्वारा विश्वविद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं यौनभेद के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य था शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन में कुल 140 शिक्षक व

www.ignited.in

शिक्षिकाओं को लिया गया। सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया कि व्यक्तित्व कारक ई के सन्दर्भ में पुरुष एवं महिला शिक्षकों में अन्तर पाया गया। व्यक्तित्व कारक एच के सन्दर्भ में पुरुष शिक्षक महिला शिक्षक की अपेक्षा अधिक सामाजिक, साहसी, नवीन कार्य करने वाले स्वभाव से गम्भीर पाये गये।

अनुसंधान क्रियाविधि

अनुसंधान के सर्वेक्षण के तरीकों का मुख्य उद्देश्य और उपयोग निम्नलिखित हैं हालांकि शोध में सर्वेक्षण पद्धति का प्रमुख उद्देश्य यह बताना है कि क्या है? समस्या या घटना का वर्णन करने के लिए, लेकिन कई सर्वेक्षण मौजूदा स्थिति के मात्र विवरण से परे हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम से संबंधित सर्वेक्षण हमें वर्तमान पाठ्यक्रम की ताकत और कमजोरियों के बारे में न केवल जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है, बल्कि परिवर्तन के लिए सिफारिश भी कर सकता है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण या मानदंड सर्वेक्षण को अक्सर प्रारंभिक चरण के रूप में किया जाता है ताकि शोधकर्ता अधिक जोरदार नियंत्रण और अधिक उद्देश्य विधियों को नियोजित कर सकें। वर्णनात्मक सर्वेक्षण या अध्ययन भी मानव व्यवहार से संबंधित मूल्यवान ज्ञान का प्रत्यक्ष स्रोत हैं।

डेटा विश्लेषण के लिए उपकरण

वर्तमान अध्ययन सरकारी और निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों को दिए जाने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को समझने का एक प्रयास है। प्राथमिक डेटा के संग्रह के लिए प्रश्नावली व्यापक साहित्य सर्वेक्षण और निजी और सरकारी दोनों महाविद्यालयों के कुछ सरकारी अधिकारियों, प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के साथ केंद्रित साक्षात्कार के माध्यम से बनाई गई थी। अंग्रेजी में प्रश्नावली और गुजराती में अनुसूची दोनों को डेटा संग्रह के लिए बनाया गया था।

महाविद्यालय (40)	सरकारी (20)	निजी (20)	कुल
प्रधानाध्यापकों	20	20	40
शिक्षकों की	200	200	400
छात्रों	200	200	400
कुल	**420**	**420**	**840**

उपसंहार

निजी महाविद्यालयों असंगठित क्षेत्र होने के कारण सभी महाविद्यालयों में प्रशिक्षण की कोई ठोस योजना नहीं होती है। वे अपने शिक्षकों की आवश्यकता, प्रशिक्षकों की उपलब्धता और महाविद्यालयों प्रबंधन की इच्छा के अनुसार इसका पालन करते हैं। दूसरी ओर, सरकारी महाविद्यालयों में एक निर्धारित प्रशिक्षण योजना होती है, लेकिन यह इतनी योजनाबद्ध होती है कि इसमें नए मुद्दों और शिक्षकों की जरूरतों को शामिल नहीं किया जाता है। अतः सरकारी प्रशिक्षणों का प्रभाव भी नगण्य पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कक्कड़, एस.बी. (2001)। शैक्षणिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: अप्रेंटिस-हॉल ऑफ इंडिया (प्राइवेट)। लिमिटेड

2. किर्कपैट्रिक, डी.एल. (1998)। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन: चार स्तर। (दूसरा प्रकाशन)। बेरेट - कोहलर पब्लिशर्स, इंक। सैन फ्रांसिस्को।

3. किर्कपैट्रिक, डी.एल. (1994)। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन। सैन फ्रांसिस्को: बेरेट-कोहलर पब्लिशर्स, इंक

4. लैयर्ड, डी., होल्टन, ई.एफ., और नेक्विन, एस.एस. (2003)। प्रशिक्षण और विकास के दृष्टिकोण: संशोधित और अद्यतन। बुनियादी किताबें।

5. मोर्टिमोर, पी., सैममन्स, पी., स्टोल, एल., लुईस, डी., और इकोब, आर. (1988ए)। स्कूल मायने रखता है: जूनियर वर्ष। वेल्स समरसेट: ओपन बुक्स पब्लिशिंग लिमिटेड।

6. नोए, आरए (2008)। कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास (चौथा संस्करण)। बोस्टन, एमए: इरविन-मैकग्रा।

7. शर्मा, एस. (2014): शिक्षकों के लिए आरटीई-ए हैंडबुक क्या है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

8. बेदीन्हम, के. (1998)। प्रशिक्षण की प्रभावशीलता प्रदान करना। शिक्षा और प्रशिक्षण, 40(4), pp. 166-167।

9. जहांगीर, एस.एफ., शाहीन, एन., और काजमी, एस.एफ. (2012)। सेवा प्रशिक्षण में: शिक्षकों के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाला एक अंशदायी

कारक। प्रगतिशील शिक्षा और विकास में अकादमिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1(1), pp. 31-38.

10. जेम्स, जी।, और चोपिन, बी। (1977)। कल के लिए शिक्षक। शैक्षिक अनुसंधान, 19(3), pp. 184-191।

11. जेनक्स, सी। (1985)। हाई स्कूल के छात्र कितना सीखते हैं? शिक्षा का समाजशास्त्र। 58(2), pp. 128-135.

12. कंथराज, एच. (2013)। सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का दृष्टिकोण। 3(8), आईएसएसएन 2230-7850।

Corresponding Author

Rakhi Kumari*

PhD Student, Kalinga University, Raipur